अवार्ड से भारतीय वैज्ञानिकों की पहचान बढ़ेगी: प्रो. राजू

भास्कर न्यूज. नई दिल्ली | सापेक्षता (रिलेटिविटी) के जनक और भौतिकी के मशहूर वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टाइन की एक गलती को सुधारने के लिए भारतीय वैज्ञानिक प्रोफेसर सीके राजू को 2010 के टेलेसिओ-गैलिली विज्ञान अकादमी के स्वर्ण-पदक पुरस्कार के लिए चुना गया है। भौतिकी में स्नातक और भारतीय सांख्यिकीय संस्थान (आईएसआई) से गणित में शोध कर चुके प्रोफेसर राजू को 10 जून को हंगरी के पेक्स विश्वविद्यालय में यह पुरस्कार दिया जाएगा। प्रो. राजू को भारत के सबसे पहले सुपर कंप्यूटर 'परम' में मदद देने के लिए भी जाना जाता है। भौतिकी की दो किताबें टाइम- टूवर्ड्स अ कॉन्सिस्टेंसी थियरी और कल्चर फाउंडेशन्स ऑफ मैथेमेटिक्स लिख चुके प्रो. राजू ने भास्कर से कहा कि इस अवार्ड से भारतीय वैज्ञानिकों के काम को दुनिया में जाना जाएगा। आइंस्टाइन की थियरी ऑफ रिलेटिविटी की गलती को ठीक करते हुए प्रोफेसर राजू ने निष्कर्ष निकाला कि 1898 से लेकर 1905 तक पोइंकरे की इंस्टेन्टेविटी एक पहलू है। आइंस्टाइन इसे समझने में गलती कर गए, जिनके सिद्धांत से आधुनिक भौतिकी को बनाया गया है। प्रो. राजू कहते हैं कि आइंस्टाइन के सिद्धांत को उनके बाद के वैज्ञानिकों ने समझने के बजाए आंख मूंदकर सही माना, जिसकी वजह से आज जिस भौतिकी को लोग पढ़ते हैं, वह गलत होता चला गया। भौतिकी में शेवार्ज डिस्ट्रीब्यूशन को गुणा करने की परिभाषा करार दे चुके प्रो. राजू का कहना है कि भारत में पढ़ाए जाने वाली भौतिकी में बदलाव लाने की जरुरत है। उन्होंने स्कूली बच्चों के लिए जोड़ने का नया तरीका ईजाद किया है, जिसे मलेशिया सरकार ने अपने स्कूलों में शामिल करने की हामी भरी है।